

Research Paper

पटना जिले के माध्यमिक स्तर के दलित छात्र- छात्राओं की सामाजिक परिक्रमता का उनकी शैक्षणिक निष्पत्ति पर अध्ययन

सत्य प्रकाश

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सार—

शिक्षा, आकर्षक, व्यवहार, कुशलता और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका है। यह छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व, चरित्र और शैक्षणिक प्रदर्शन को विकसित करने में मदद करती है, जिससे वे अपने जीवन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं। शैक्षणिक निष्पत्ति से तात्पर्य है छात्र-छात्राओं द्वारा शैक्षणिक कार्य में सीखने की प्रक्रिया के समय संबंधित किसी क्षेत्र में प्राप्त योग्यता की सफलता से प्राप्त डिग्री के स्तर से है, या सीखे गये ज्ञान और कौशल से प्राप्त परीक्षा के परिणामों को अंकों या ग्रेड के रूप में प्रदर्शित करना। जितना अधिक स्तर उच्च होगा छात्र-छात्राओं के लिए उतने ही अधिक अवसर खुलेंगे और वे सभी क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करके भविष्य में अपने करियर बेहतर कर सकेंगे। यह अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन में पटना जिले के सरकारी विद्यालयों के 154 माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से किया गया। सामाजिक परिपक्वता एवं शैक्षणिक निष्पत्ति पैमाने का निर्माण और सत्यापन शोधकर्ता द्वारा किया गया, जिसमें इसकी विश्वसनीयता का मान 0.86 था। था। एकत्रित आंकड़ों का प्रतिशत और सहसंबंध विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक निष्पत्ति मध्यम स्तर की थी और माध्यमिक छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक निष्पत्ति के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध है।

मुख्य बिंदु : सामाजिक परिपक्वता, शैक्षणिक निष्पत्ति, माध्यमिक, छात्र-छात्राएँ।

परिचय—

सामाजिक परिपक्वता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति में व्यक्तिगत संबंधों को बनाये रखने, स्वयं के आत्म-सम्मान के प्रति और सामाजिक योग्यताओं के विकास के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण विकसित करती हैं। शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता की तरह ही सामाजिक परिपक्वता भी अब लोगों के बीच अक्सर चर्चा का विषय बन गयी है। क्योंकि यह स्पष्ट हो गया है कि चाहे पाँच साल का बच्चा हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े, या आठ साल का बच्चा आँखों में आँखें डालकर कृपया और धन्यवाद कहे, या बारह साल का बच्चा इनमें से कुछ भी न करे, हर किसी की परिपक्वता पर टिप्पणी होने की संभावना रहती है, जो बच्चा शिष्टाचार की बारीकियों से परिचित होता है जैसे कि माता-पिता द्वारा ऐसे व्यवहार का उदाहरण पेश करना, जिसका छात्रों द्वारा पालन किया जाता है, जिससे वह सामाजिक रूप से परिपक्व प्रतीत हो सकता है। परिपक्वता का अर्थ है वह विकास और वृद्धि जो किसी भी अनसीखे व्यवहार के होने से पहले या किसी विशेष ज्ञान के होने से पहले आवश्यक है। आत्म-नियंत्रण प्राप्त करना आंशिक रूप से परिपक्वता और आंशिक रूप से सीखा हुआ व्यवहार है। माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्रा यह भली-भांति समझते हैं कि समाज उनसे इस उम्र में बचपन के व्यवहार में लौटने की अपेक्षा नहीं करता है, इसलिए वे समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरने और अपने व्यवहार को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। सामाजिक रूप से परिपक्व छात्र-छात्रा अक्सर बेहतर भावनात्मक क्षमता के साथ-साथ तनाव, निराशा और असफलताओं से निपटने में सहायक होते हैं। शिक्षा मानव जीवन की अमूल्य निधि है। यह व्यक्ति को मानसिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे कि वह अपने आसपास की दुनिया में कुशलतापूर्वक ढलने के साथ-साथ अपने परिवार का स्वयं का और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो सके। शैक्षणिक निष्पत्ति से तात्पर्य है छात्र-छात्राओं द्वारा शैक्षणिक कार्य में सीखने की प्रक्रिया के समय संबंधित किसी क्षेत्र में प्राप्त योग्यता की सफलता से प्राप्त डिग्री के स्तर से है, या सीखे गये ज्ञान और कौशल से प्राप्त परीक्षा के परिणामों को अंकों या ग्रेड के रूप में प्रदर्शित करना। जितना अधिक स्तर उच्च होगा छात्र-छात्राओं के लिए उतने ही अधिक अवसर खुलेंगे और वे सभी क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करके भविष्य में अपने करियर बेहतर कर सकेंगे।

पुरोहित(2020) ने अपने शोध पत्र में पाया कि “1.कॉलेज छात्रों के सामाजिक परिपक्वता के औसत स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है इसलिए यह कहा जा सकता है कि लड़कियों के कॉलेज छात्रों के समूह में लड़कों के कॉलेज छात्रों के समूह की तुलना में उच्च सामाजिक परिपक्वता है।2.कला, वाणिज्य और विज्ञान संकाय के महाविद्यालय छात्रों के बीच सामाजिक परिपक्वता के औसत स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। और 3.लिंग और संकाय के संबंध में सामाजिक परिपक्वता के औसत स्कोर के अंतःक्रियात्मक प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इस अध्ययन का उद्देश्य महाविद्यालय के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता का पता लगाना था, साथ ही लिंग और संकाय के संदर्भ में सामाजिक परिपक्वता की जाँच करना भी इसका उद्देश्य था। डॉ.रोमा पाल(1986) द्वारा तैयार किए गए सामाजिक परिपक्वता के व्यापक मॉडल (ACSSM) का उपयोग किया गया। नमूने में कुल 120 महाविद्यालय छात्र शामिल थे, जिनमें से 60 छात्र लड़के (कला संकाय के 20, वाणिज्य संकाय के 20 और विज्ञान संकाय के 20) और 60 छात्राएँ (कला संकाय की 20, वाणिज्य संकाय की 20 और विज्ञान संकाय की 20) थीं। डेटा बनासकांठा जिले से एकत्र किया गया था। डेटा को मैनुअल के अनुसार स्कोर किया गया और विश्लेषण किया गया। 'एफ' परीक्षण की गणना की गई।”

सिंह (2022) ने अपने शोध पत्र में पाया कि “सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण और सकारात्मक सहसंबंध है। इसमें यह देखा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक 0.05 स्तर पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि यदि सामाजिक परिपक्वता उच्च है, तो उच्च माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि भी उच्च होगी।”

कौशिक, तिवारी और कुमार (2026) ने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि “जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व संतुलित एवं सामाजिक रूप से परिपक्व होता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है। प्रस्तुत शोध का शीर्षक उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुण एवं उनकी सामाजिक परिपक्वता का उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। इस शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के पासकीय विद्यालय के 80 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में चयनित किया गया है। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। डेटा संकलन हेतु मानकीकृत व्यक्तित्व मापनी (डॉ० यशवीर सिंह और डॉ० हरमोहन सिंह) सामाजिक परिपक्वता मापनी (डॉ० नलिनी राव) तथा विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम का उपयोग किया गया है। संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों जैसे सह-संबंध एवं टी-परीक्षण द्वारा किया गया है। अध्ययन में यह परिकल्पना की गई है कि व्यक्तित्व एवं सामाजिक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक अंतर पाया जाएगा।”

सिंह सुरजीत(2013) ने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि “सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। सामाजिक परिपक्वता में कई क्षेत्रों में उपलब्धियाँ शामिल हैं, जिनमें स्वतंत्र रूप से कार्य करना, प्रभावी पारस्परिक संचार, अंतःक्रिया और जिम्मेदारी निभाना, यानी समाज के कल्याण में योगदान देना शामिल है।”

अध्ययन का महत्व-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक व्यवस्था के बिना उसके अस्तित्व की कल्पना करना असंभव है। वह समाज में जन्म लेता है एवं समाज में वृद्धि-विकास करता है। वह समाज में काम करता है और प्रगति करता है। किसी भी व्यक्ति की सामाजिक परिपक्वता के पीछे अनेक कारक होते हैं जैसे-माता-पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोसी, सहकर्मी समूह, समाज आदि। सामाजिक परिपक्वता उम्र के साथ बढ़ती है और यह छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक पर काफी हद तक प्रभाव डालती है। आजकल शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन गई है, जो व्यवहारिक परिपक्वता के अभाव में उच्च पदों की ओर ले जाती है। इसलिए शिक्षा को सामान्य पाठ्यक्रम के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उच्च मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए। शोधकर्ता माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध जानने में रुचि रखता है। शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक परिपक्वता दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस संदर्भ में वर्तमान अध्ययन का विशेष महत्व है।

अध्ययन का उद्देश्य-

- माध्यमिक स्तर के दलित छात्र -छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति के स्तर का आकलन करना।
- माध्यमिक स्तर के दलित छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति का स्तर मध्यम है।
- माध्यमिक स्तर के दलित छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच कोई संबंध नहीं है।

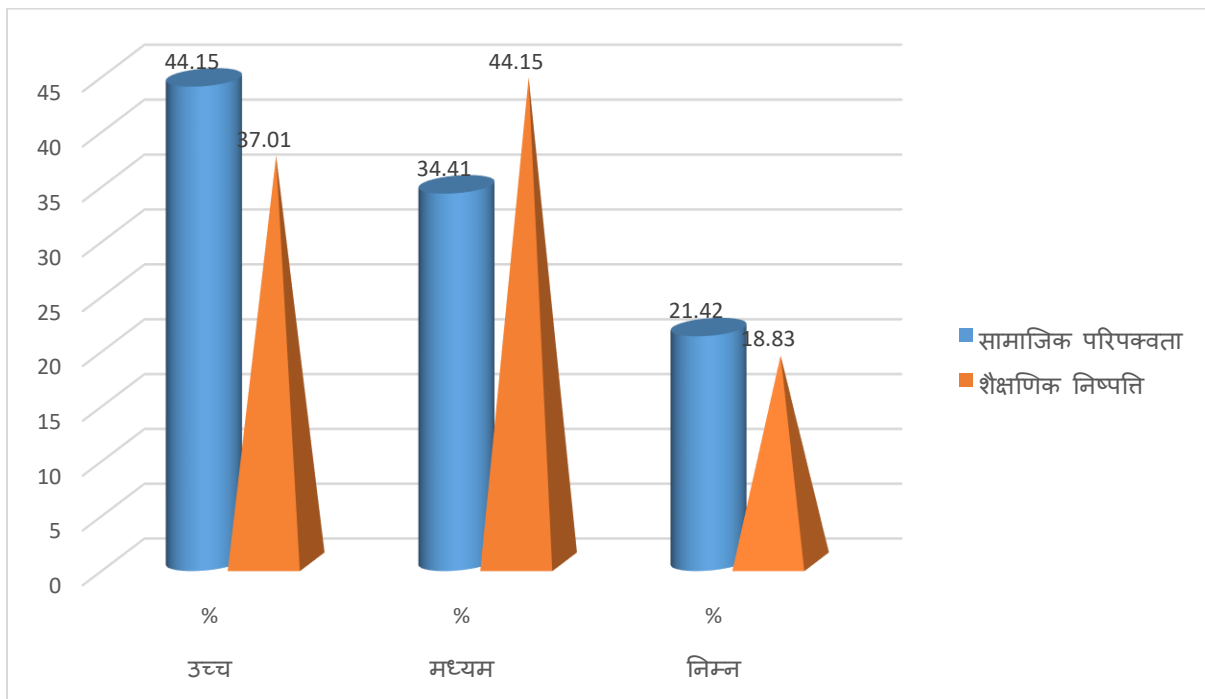
शोध पद्धति-

इस अध्ययन के लिए पटना जिले के माध्यमिक स्तर के 154 छात्र-छात्राओं का एक नमूना चयन किया गया और आंकड़ों को एकत्र किया गया। आंकड़ों को मैनुअल के अनुसार स्कोर किया गया और विश्लेषण किया गया। प्रतिशत, आवृत्ति और सहसम्बन्ध की गणना SPSS-20 पर की गई। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई है। इस अध्ययन के लिए भारतीय परिस्थितियों के अनुसार उपकरण को अपनाया गया है। शोधकर्ता ने माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता को मापने के लिए मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया है। उपकरण की वैधता और विश्वसनीयता स्थापित की है, उपकरण की विश्वसनीयता 0.79 है।

परिणाम एवं विश्लेषण-

तालिका सं.- 1 माध्यमिक स्तर के दलित छात्र- छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति

चर	उच्च		मध्यम		निम्न	
	N	%	N	%	N	%
सामाजिक परिपक्वता	48	44.15	53	34.41	33	21.42
शैक्षणिक निष्पत्ति	57	37.01	68	44.15	29	18.83



चित्र सं1

तालिका सं.- 1 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल 53 (34.41%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यम स्तर है, उसके बाद 48 (44.15%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का उच्च स्तर है, जबकि 33 (21.42%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का निम्न स्तर है।

इसी प्रकार 68 (44.15%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति का मध्यम स्तर है, उसके बाद 57(37.01%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति का उच्च स्तर है, जबकि 29(18.83%) माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति का निम्न स्तर है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता कि माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में औसत छात्र-छात्राओं में जागरूकता का स्तर निम्न और उच्च स्तर वाले छात्र-छात्राओं की तुलना में अधिक होता है। तथा माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति में छात्र-छात्राओं में जागरूकता का स्तर निम्न और उच्च स्तर वाले छात्र-छात्राओं की तुलना में अधिक होता है।

तालिका सं.2- माध्यमिक स्तर के दलित छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध।

चर	N	r value	स्तर
सामाजिक परिपक्वता	154	0.19	सार्थक स्तर है
शैक्षणिक निष्पत्ति			

तालिका -2 से यह स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक 0.05 स्तर पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि यदि सामाजिक परिपक्वता उच्च है, तो माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक निष्पत्ति भी उच्च होगी।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता कि माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच महत्वपूर्ण और सकारात्मक सहसंबंध है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ-

सामाजिक रूप से परिपक्व छात्रों में अक्सर बेहतर भावनात्मक विनियमन और मुकाबला करने की क्षमता होती है। यह, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अधिक सुसंगत होता है। स्कूलों को सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण कार्यक्रमों को शामिल करने से लाभ हो सकता है, जिससे छात्रों में इन कौशलों का विकास हो सकेगा। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने वाली शिक्षण रणनीतियाँ छात्रों की एकाग्रता और दृढ़ता को बढ़ा सकती हैं। शिक्षकों को सहयोगात्मक अधिगम और सहपाठियों के बीच मेलजोल के अवसर सृजित करने चाहिए, जिससे ऐसे वातावरण का निर्माण हो जहाँ शैक्षणिक कौशल के साथ-साथ सामाजिक कौशल को भी महत्व दिया जा सके। माध्यमिक विद्यालय आत्म-नियमन और संगठनात्मक कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए रणनीतियाँ लागू कर सकते हैं, जैसे लक्ष्य निर्धारण अभ्यास, समय प्रबंधन कार्यशालाएँ और चिंतन गतिविधियाँ। विद्यालयों को करियर की तैयारी को एकीकृत करके विद्यार्थियों को शिक्षा से परे जीवन के लिए तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

निष्कर्ष-

माध्यमिक छात्र-छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर मध्यम था। माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

संदर्भ सूची-

- मुक्ता कौशिक, रिया तिवारी, नरेन्द्र कुमार)2026 ("उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"Int. J. Humanit. Educ. Res.;8(6):57-60.
- सिंह ए) .2022 ,एक अध्ययन एजुकेशनल मेटामोर्फोसिस:कानपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता (vol.)11(49-54
- पुरोहित पी वर्षा)2020द स्टडी ऑफ शोसल मेच्योरिटी एमांग कॉलेज स (्टुडेंट,The International Journal of Indian Psychology,ISSN 2348- 5396,Vol. 8, Issue1-I

- Umamaheswari S.,KarthikeyanP (2024) Social Maturity Among Higher Secondary Students In Relation To Their Academic Achievement. Educational Administration: Theory and Practice, 30(3),2674- 2678ISSN: 2148-2403
- Surjit Singh (2013) Acadmic achievment of high school students in relation to their anxiety emotional maturity and socil maturity